एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कृषि विस्तार सेवाओं में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) का महत्व: एक विस्तृत विश्लेषण

(*नीरज राज एवं अदिति ताम्रकार)
एम.एससी., कृषि विस्तार विभाग, कृषि महाविद्यालय, एमजीसीजीवीवी, चित्रकूट, सतना, मध्य प्रदेश
*संवादी लेखक का ईमेल पता: neerajraj193@gmail.com

कृषि विस्तार सेवाएँ (Agricultural Extension Services) कृषि उत्पादकता, किसानों की आय और ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये सेवाएँ किसानों को नवीनतम तकनीक, फसल प्रबंधन, बाजार पहुँच और जलवायु अनुकूलन से संबंधित ज्ञान प्रदान करती हैं। हालाँकि, पारंपरिक सार्वजनिक विस्तार प्रणालियाँ अक्सर संसाधनों की कमी, प्रौद्योगिकी अंतराल और पहुँच की सीमाओं का सामना करती हैं। इन चुनौतियों को दूर करने में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (Public-Private Partnership – PPP) एक क्रांतिकारी समाधान के रूप में उभरी है। यह लेख PPP के महत्व, उदाहरणों, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डालता है।

कृषि विस्तार सेवाओं की आवश्यकता

कृषि विस्तार सेवाएँ किसानों और कृषि उद्योग के बीच एक सेतु का काम करती हैं। इनका मुख्य उद्देश्य है:

- नवीन कृषि तकनीकों का प्रसार।
- फसल उत्पादन और कीट प्रबंधन में प्रशिक्षण।
- बाजार संपर्क और मूल्य श्रृंखला विकास।
- जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन बढ़ाना।

भारत जैसे देश में, जहाँ 58% आबादी कृषि पर निर्भर है, इन सेवाओं का महत्व और बढ़ जाता है। हालाँकि, सरकारी विस्तार सेवाएँ अक्सर अक्षमता, भ्रष्टाचार और तकनीकी अद्यतन के अभाव से जूझती हैं।

सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) क्या है?

PPP एक ऐसा मॉडल है जहाँ सरकार और निजी क्षेत्र संयुक्त रूप से परियोजनाओं को डिजाइन, वित्तपोषित और कार्यान्वित करते हैं। कृषि विस्तार के संदर्भ में, इसका अर्थ है:

- निजी कंपनियों द्वारा तकनीकी विशेषज्ञता और नवाचार का योगदान।
- सरकार द्वारा नीतिगत समर्थन और बुनियादी ढाँचे की सुविधा।
- संसाधनों का कुशल आवंटन और जोखिम साझाकरण।

उदाहरण: राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY) और प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY) में निजी क्षेत्र की भागीदारी।

PPP का महत्व: क्यों आवश्यक है?

संसाधनों का अनुकूलन: सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) कृषि विस्तार में संसाधनों के अनुकूलन के लिए महत्वपूर्ण है। सरकार के पास सीमित बजट और मानव संसाधन होते हैं, जबकि निजी कंपनियाँ निवेश, तकनीकी ज्ञान और बाजार पहुँच प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, ITC की e-Choupal पहल ने डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से 4 मिलियन किसानों को सीधे बाजार से जोड़ा। यह मॉडल संसाधनों का कुशल उपयोग करता है और किसानों को बेहतर मूल्य दिलाने में मदद करता है। इससे सरकारी संसाधनों का बोझ कम होता है और निजी क्षेत्र की विशेषज्ञता का लाभ मिलता है। PPP मॉडल कृषि उत्पादकता बढ़ाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रौद्योगिकी और नवाचार का प्रसार: PPP मॉडल कृषि में प्रौद्योगिकी और नवाचार को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाता है। निजी क्षेत्र ड्रोन टेक्नोलॉजी, AI-आधारित मृदा विश्लेषण, और मौसम पूर्वानुमान जैसी आधुनिक तकनीकों को लागू करने में सक्षम है। उदाहरण के लिए, महिंद्रा एग्री सॉल्यूशंस ने स्मार्ट फार्मिंग टूल्स को छोटे किसानों तक पहुँचाया है। यह तकनीक किसानों को फसल प्रबंधन, कीट नियंत्रण और संसाधनों के कुशल उपयोग में मदद करती है। निजी कंपनियाँ नवीन समाधानों के साथ कृषि उत्पादकता बढ़ाने में योगदान देती हैं। इससे किसानों को अधिक लाभ मिलता है और कृषि क्षेत्र में आधुनिकीकरण को गति मिलती है।

पहुँच और दक्षता में वृद्धि: PPP मॉडल कृषि सेवाओं की पहुँच और दक्षता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों तक बेहतर सुविधाएँ और ज्ञान पहुँचाता है। उदाहरण के लिए, केरल में हरित क्रांति मिशन ने सरकार और निजी कंपनियों के सहयोग से 2 लाख किसानों को जैविक खेती का प्रशिक्षण दिया। इससे किसानों को नई तकनीकों और सर्वोत्तम प्रथाओं की जानकारी मिली। PPP मॉडल के माध्यम से संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार आता है। यह किसानों की आय बढ़ाने और ग्रामीण विकास को गति देने में मददगार साबित होता है।

टिकाऊ कृषि को बढ़ावा: PPP मॉडल टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निजी क्षेत्र जैविक खेती, जल संरक्षण, और पर्यावरण अनुकूल प्रथाओं में निवेश करके कृषि को अधिक टिकाऊ बनाने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, पेप्सिको की फॉर्मिंग इनिशिएटिव ने पंजाब के किसानों को भूजल संरक्षण तकनीक सिखाई, जिससे पानी के अत्यधिक उपयोग को कम किया गया। यह पहल न केवल पर्यावरण को बचाती है, बल्कि किसानों की लागत भी कम करती है। निजी कंपनियाँ टिकाऊ कृषि प्रथाओं को अपनाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करती हैं और उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करती हैं। इससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है, जल संसाधनों का सही उपयोग होता है, और कृषि उत्पादन लंबे समय तक टिकाऊ रहता है। PPP मॉडल के माध्यम से निजी क्षेत्र और सरकार मिलकर ऐसी परियोजनाएँ चलाते हैं जो पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखते हुए किसानों की आय में वृद्धि करती हैं। इस तरह, टिकाऊ कृषि न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी लाभदायक साबित होती है।

बाजार संपर्क और मूल्य श्रृंखला विकास: PPP मॉडल किसानों को बाजार से जोड़ने और मूल्य श्रृंखला विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह मॉडल किसानों को प्रोसेसिंग यूनिट्स, रिटेल चेन्स और निर्यात बाजारों से सीधे जोड़ता है, जिससे उन्हें उचित मूल्य मिलता है। उदाहरण के लिए, अमूल मॉडल ने गुजरात के डेयरी किसानों को वैश्विक बाजार से जोड़कर उनकी आय में वृद्धि की। इस मॉडल के तहत किसानों को उनके उत्पादों के लिए बेहतर मूल्य मिलता है और बिचौलियों की भूमिका कम होती है।

निजी कंपनियाँ बाजार तक पहुँच बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीक और लॉजिस्टिक्स सपोर्ट प्रदान करती हैं। इससे किसानों की उपज की गुणवत्ता और मूल्य दोनों में सुधार होता है। PPP मॉडल के माध्यम से किसानों को प्रशिक्षण और संसाधन भी मिलते हैं, जिससे वे अपने उत्पादों को बाजार की मांग के अनुसार ढाल सकते हैं। इस तरह, यह मॉडल किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद करता है।

चुनौतियाँ और समाधान

संभावित चुनौतियाँ

सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल के कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ सामने आती हैं:

1. **हितों का टकराव:** निजी कंपनियाँ अक्सर लाभ को प्राथमिकता देती हैं, जबकि सरकार का उद्देश्य सामाजिक कल्याण होता है। इससे दोनों पक्षों के बीच मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं।
2. **छोटे किसानों की उपेक्षा:** निजी क्षेत्र बड़े किसानों पर ध्यान केंद्रित कर सकता है, क्योंकि उनके साथ काम करना आसान और लाभदायक होता है। इससे छोटे और सीमांत किसान पीछे रह जाते हैं।
3. **नीतिगत अस्थिरता:** सरकारी नीतियों में बदलाव या राजनीतिक अस्थिरता के कारण परियोजनाएँ प्रभावित हो सकती हैं। इससे निजी कंपनियों का विश्वास कम होता है।
4. **पारदर्शिता की कमी:** यदि परियोजनाओं में पारदर्शिता नहीं है, तो भ्रष्टाचार और अनियमितताएँ बढ़ सकती हैं।
5. **संसाधनों का असमान वितरण:** कुछ क्षेत्रों में संसाधनों का अधिक ध्यान दिया जा सकता है, जबकि अन्य क्षेत्र उपेक्षित रह जाते हैं।

समाधान

इन चुनौतियों को दूर करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

1. **पारदर्शिता और निगरानी:** परियोजनाओं की निगरानी के लिए स्वतंत्र एजेंसियों को शामिल किया जाए ताकि पारदर्शिता बनी रहे।
2. **सामुदायिक भागीदारी:** स्थानीय समुदायों और स्वयंसेवी संगठनों को शामिल करके छोटे किसानों की आवाज़ सुनना।
3. **पायलट प्रोजेक्ट्स:** बड़े स्तर पर परियोजनाएँ शुरू करने से पहले छोटे पायलट प्रोजेक्ट्स के माध्यम से परीक्षण करना।
4. **नीतिगत स्थिरता:** सरकार को दीर्घकालिक नीतियाँ बनानी चाहिए ताकि निजी क्षेत्र का विश्वास बना रहे।
5. **संतुलित वितरण:** संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित करने के लिए कमजोर क्षेत्रों और छोटे किसानों पर विशेष ध्यान देना।

निष्कर्ष

सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) कृषि विस्तार सेवाओं को अधिक प्रभावी, टिकाऊ और समावेशी बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह मॉडल सरकार और निजी क्षेत्र के संसाधनों, तकनीकी ज्ञान और नवाचार को एक साथ लाकर कृषि क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है। PPP के माध्यम से संसाधनों का कुशल उपयोग होता है, जिससे किसानों को नवीनतम तकनीक, प्रशिक्षण और बाजार तक पहुँच मिलती है। इससे न केवल कृषि उत्पादकता बढ़ती है, बल्कि किसानों की आय में भी वृद्धि होती है। हालाँकि, PPP मॉडल को सफल बनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण शर्तों को पूरा करना आवश्यक है। पारदर्शिता, समुदाय की सक्रिय भागीदारी और नीतिगत स्थिरता इसकी सफलता के मुख्य आधार हैं। यदि

इन पहलुओं पर ध्यान नहीं दिया गया, तो हितों का टकराव, छोटे किसानों की उपेक्षा और परियोजनाओं की विफलता जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए, PPP मॉडल को लागू करते समय इन चुनौतियों को ध्यान में रखना और उनके समाधान के लिए प्रभावी रणनीतियाँ बनाना आवश्यक है। भारत जैसे देश में, जहाँ कृषि अभी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और लाखों लोगों की आजीविका का स्रोत है, PPP मॉडल को प्राथमिकता देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह मॉडल न केवल किसानों को आधुनिक तकनीक और बाजार से जोड़ता है, बल्कि टिकाऊ कृषि प्रथाओं को भी बढ़ावा देता है। इससे पर्यावरणीय संतुलन बना रहता है और भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधन सुरक्षित रहते हैं। अंततः, PPP मॉडल कृषि क्षेत्र में एक समग्र और समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। यदि इसे सही ढंग से लागू किया जाए, तो यह न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधार सकता है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत कर सकता है। इसके लिए सरकार, निजी क्षेत्र और स्थानीय समुदायों के बीच मजबूत सहयोग और समन्वय आवश्यक है। इस तरह, PPP मॉडल कृषि विस्तार सेवाओं को एक नई दिशा दे सकता है और देश के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

संदर्भ

1. FAO. (2020). Public-Private Partnerships for Agricultural Extension. Rome: FAO.
2. World Bank. (2019). Enhancing Agricultural Productivity through PPPs.
3. Singh, R. (2021). "Digital Green and Farmer Empowerment," Journal of Agricultural Economics, 45(3), 112-130.
4. ITC. (2022). e-Choupal Impact Report. Retrieved from [www.itcportal.com] (https://www.itcportal.com)
5. Government of India. (2018). National Policy on Agricultural Extension.
6. Khanna, A. (2020). "Role of Private Sector in Indian Agriculture," Economic and Political Weekly, 55(12).
7. PepsiCo. (2021). Sustainable Farming Initiative in Punjab.
8. Digital Green. (2023). Annual Report 2022-23.
9. Amul. (2022). Dairy Cooperative Model Case Study.
10. Kenya Horticulture Competitiveness Project. (2019). Final Evaluation Report.